आधुनिक युग में मध्ययुगीन स्थिति का संवाहक: कन्या स्त्रीणत्या

कभी सोचा ही नहीं था कि स्त्री को भिक्षारियों की बराबरी पर रख दिया जाएगा, क्या इसलिए नहीं इतने मंत्र शोक रचे गए हैं, जिसमें नारी की पूजा का ठिठोरा पीठ जाता है जो बड़-बढ़ कर जयमान करते हैं वे ही हिला होलकर निंदा करते हैं।

मानव जाति के जन्म, उत्थान एवं प्रेरणा की दाती, सहचरी एवं सहभागिनी के रूप में जीवन-साजी को सफल, युगुम तथा समृद्धिमय बनाने वाली माता, कन्या, वहन एवं पत्नी के रूप में त्याग की प्रतिमूर्ति नारी की महत्ता मानव जाति के साथ बराबर मान्य है। अधिकारी की अधिकारिणी ने अपनी शक्ति एवं सुदृढ़ता के दरवार सम्पूर्ण हर अधिकार एवं प्रमुख जमाया, किन्तु समाज के उत्थान एवं पतन के साथ मान-सम्मान, अपमान एवं तिरस्कार अपेक्षा एवं उपेक्षा के नमास रास्ते भी उसने तय किए हैं। कभी त्यापक मार्ग तो कभी पतली गली का रास्ता उसे दिखाया गया है।

ईश्वर ने सृष्टि रचते बक्त स्त्री-पुरुष में कोई भेद-भाव नहीं किया। मनुष्य ने अपनी सहभागिता के लिए काम बॉट लिया, पारे-भी देख सभी में अधिकार भी बंट गए। स्त्री गामी और उसने दरवाजे पर दस्तक देना शुरु कर दिया। दरवाजे पूरी तरह खुले भले न हो लेकिन ताजी हवा आने लायक क्षरोखा जरूर बन गया है।

Bangabasi Morning College 19, Rajkumar Chakaraborty Sarani Kolkata – 9
E-mail : tulikachakravorty1@gmail.com
हो सकता है कि कुछ लोग हमारी बुद्धिपर संशय करे लेकिन यह नया है कि जब देश के 
बुद्धिजीवी किसी समस्या को लेकर चीन्ह रहते हैं तब उसे हम समस्या नहीं बल्कि समस्याओं या सामाजिक 
विकारों का परिणाम मानते हैं। इस देश में गर्भ में कन्या की हत्या करने का फैशन करीब बीसों साल 
पुराना हो गया है कन्या भूषण हत्या के ज्यादा मामले शहरी क्षेत्रों में ज्यादातर दिख रहे हैं।

कदाचित् कन्या भूषण हत्या स्थर-जाति के विकृत जोड़ने तिरामय अपराध है। कन्याओं का उनकी 
माँ की कोश में कृत्रिम बुद्धिपत्ता को शर्मसार करने लाया कृत्रिम है। खेत की बात है कि भारत में 
कठोर कानूनी प्रावधानों के बावजूद सितारों को समूह नष्ट करने का सुनियोजित धार्मिक धार्मिक से चल रहा 
है।

राजपुत्राओं में एक परम्परा थी कि वे अपना सिर किसी के सामने झुकने देना नहीं चाहते थे। इस 
कारण वे कन्या के जन्म होते ही उन्हें भार डालते थे। उस समय भूषण हत्या नहीं होती थी क्योंकि उस 
समय इसकी जांच करने की कोई मशीन का निर्माण ही नहीं हुआ था। यह सिलसिला पारंपरिक हुआ जब देश 
में गर्भ में भूषण की पहचान कर सकने वाली अल्ट्रासून्द मशीन का विकिटस्क्री दुर्घटना प्रारम्भ हुआ। 
दरअसल पश्चिम के वैज्ञानिकों ने इसकी आवश्यकता गर्भ में पल रहे तथा अन्य लोगों के पेट के दोषों की 
पहचान कर उसका इलाज़ करने की नीति से किया था। भारत में जिनी चिकित्सालयों में भी इसी उद्देश्य 
को लेकर इस मशीन को उपयोग में लाया गया लेकिन जिस तरह इसका दुर्घटना गर्भ में पल रहे बच्चे 
का लिंग परीक्षण कराकर कन्या-भूषण हत्या का फैशन प्रारम्भ हुआ और ऐसी स्थिति में समाज की स्थिति 
विस्तार गई।

समय तथा मध्यवर्गीय समाज में किसी कन्या भूषण हत्याएं हुईं इसकी जानकारी नहीं दी जा 
सकती। सभी दंशिकाओं के विषय में तो यह बात नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन उसी संतान यदि लड़की है 
और दूसरी के रूप में लड़का और दोनों के बीच उम्र का अंतर अधिक है तो समझ सीखकि कि कहीं न 
कहीं भूषण हत्या हुई है ऐसा एक सामाजिक विशेषज्ञ ने अपने लेख में लिखा था।

बुजुर्ग लोग कहते हैं कि बेटी ऐसा पोषा है, जिसे ताउम पैसों से सौंचना पड़ता है, लिहाजा बचपन 
से ही उनके पालन-पोषण में कठोरी की भूलआत हो जाती है। इसका एक उपाय और भी है उनका गला 
गर्भ में ही घाट दिया जाए। भूषण-हत्या के कारण दहेज-पत्थर कम होने की आशा की जा रही थी यह वर्ष 
का सिलसिला है और दहेज-पत्थर खतम होने का नाम नहीं ले रही है। शादी का संस्कार बाजार नियम पर 
आधारित है अर्थात धर्म और संस्कार की बात एक दिखावे के लिए है।
जनगणना - 2011 के आंकड़े

जनगणना - 2011 के आंकड़े की पहली खबर लेना आवश्यक है। वर्ष 2011 की जनगणना के आंकड़े के अनुसार भारत की जनसंख्या एक अरब इकाई करोड़ हो गई है, इसमें पुरुषों का प्रतिशत 51.54% और स्त्रियों 48.46% है। राष्ट्रीय लिंगानुपात के बादत्ते तो यह चिन्हित दृष्टि के साथ 940 स्त्री प्रति 1000 पुरुष दर्ज किया गया है, परन्तु 0-6 वर्ष तक के बच्चों में लिंगानुपात केवल 914 है। आशय यह है कि पिछले दशक में भी लगातार लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को प्राथमिकता दी गई है। यानि 0 से 6 के आयु समूह का लिंगानुपात निरंतर घट रहा है, किन्तु 2011 में बच्चों के लिंगानुपात में स्वायत्तता के बाद से सर्वाधिक दर्जी है। आंकड़े तब मौलिक हो जाते हैं, जब लिंगानुपात शिक्षा और आवश्यक समूह के सहस्रबन्ध स्थान का प्रभाव छो सा होता है।

वस्तुतः हमारी चित्रा का केंद्रविद्यु भी यह है, अपराधकृत पृथ्वी एवं तत्कालि मनोवृत्ति के तहत में उत्तरोत्तर विशेष यह मूलभूत नहीं किया जा सकता।

गैर साक्ष्यात्मक संगठन की ओर से किए गए अध्ययन में भी अब तक की दाखिलाओं को अध्ययन करते हुए बताया गया कि कठोर - भूणाहत्या के ज्यादा मामले शहरी क्षेत्रों में उभर गए हैं और इसमें विभिन्न पात्र थे। क्योंकि कोई इंदिरा में बदलता नहीं है जब कि समाज की अंदर में विभिन्न लोगों का काम होता है, पर अब लगातार आ रहे आंकड़े बता रहे हैं कि शहरों में यह प्रवृत्ति बदती जा रही है। अंतु से मुख्यतः एवं दैनिक समाचारों के माध्यम से हम सुनते हैं कि देश के विभिन्न व्यक्तियों के अन्य सत्ताओं के असंताली के अस-पाल कारों के आगे में नालों में, कल्याण-भूण निर्माण हेतु। इसकी जोड़ी का लक्षण भी होती है लेकिन बढ़ते ढाके के तीन पात्र। जोड़ी का रिपोर्ट उन्होंने कारों के डिफेंस में ही चली जाती है। इस समाज के लिए बनाए गए हो नहीं है, हमारी मानसिकता ही है, सिर्फ 10 फीसदी महिलाओं यह जानकर खुश होते हैं कि उनकी बहुत ने बेटी को जन्म दिया हैं। ऐसे में लड़कियों को दुयमा में आने से रोकने के लिए कितने यत्न होते हैं इसे आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है। भारतवर्ष में स्त्रियों की दशा से एक रचना फरवरी 1983 के ‘बिहार बंधु’ में।

धर्मशास्त्रों में नारी

अत्यन्त, यह नायांस्तु पुजायते, रामन्तु तत्र देवता: का उद्धोप करने वाले देश भारत की जमीनी हंकीं कुछ ओर तो बता कर रही है। वस्तुतः हमारे धर्मशास्त्रों में नारी के प्रति अर्नकार और घृतनीय भवनाओं को व्यक्त करने वाले ऐसे वाक्यों तो अंगुलियों पर गिरने लगा सकते हैं, किन्तु नारी नंगा की दवार है जैसे उद्धरण सहस्त्रों की सन्ध्या में यह-स्वतंत्र सत्यांब बिखरे पड़े हैं। ऐसी भी पूजा तो उस बल लशु की भी होती है, जिसे समझने अपनी स्वार्थसाधन से निभित घोर यातालाग्न देकर मार डालता है। अतः कठोर भूणाहत्या के रूप में अज हम जिस मानवीय वास्तव से दो-चार हों रहे हैं, उसकी जड़े बहुत गहरी हो गई है। सदियों से परत-दर-परत जमी संध्य ही आज हमारी सौंपों का प्रश्न बन गई है।
मिसंदह पुनर्षेषण भारतीय जनमानस के मूल्यांकाओं में सर्वप्रथम है। कहते हैं कि वह दुर्ग के अंतर्गत शाब्दिक की प्राप्ति नहीं होती है और जब देव्योग से हों तो तर्क-शादृश ओर जलदान के अभाव में वह भी शाब्दिक की प्राप्ति नहीं होती। पुनरस्करण के बिना संपत्ति के अधिकार की भी भिन्नता है - दुसह और दुख और अन्यथा प्रयत्नोपादेश धृत्रांशु द्वारा भूतांशु के वस्त्राल में बात की बात और कहा हो सकती है। हम पुनरस्करण से पुनर्जागरण का अन्वेषण अथवा जाने पुस्तकों का अन्वेषण कर रहे हैं। अत: उसके द्वारा सम्पत्ति के बिना जाने की कल्पना से ही पुनर्जागरण के संबंध में लगभग हो उठते हैं। आत्म-सम्बन्ध की इसी भावना से प्रतिबंधित होकर लोग आते वालें सात पीढियों तक का प्रभाव कर जाते हैं। पुनर्जागरण के आलंपण अर्थात धुरिंद्रकस्त्रामें सहाय देने व बनावट करने के लिए भी है - अधिकांश विचारकों के अनुसार यह अक्षर तर्क है। जहाँ तक भारतीय संस्कृति और उसकी परंपरा का प्रश्न है, तो हम यह विवाद में मिला है कि पुरातन की गति नहीं होती। इसीलिए वेद, कन्याशिशु को अनिश्चित-अवैधि बनाते हैं। वेदों में पुनर्जागरण के लिए सम्बन्धित विषय का विवाह है, जो पुनर्जागरण-संस्कार के नाम से जाना जाता है। इसमें कहा गया है कि - हे प्रजाति। तुलनात्मक अनुसंधान के बनाया है, कन्या का जन्म कहीं और हो, इस ग्रंथ के सुपुरुष हो।

इसी प्रकार एक अन्य संस्कार में गर्भ-संस्कार के लिए आह्वान किया गया है - हे पति। उत्पत्ति होने वाले पुत्र की रक्षा करो, उसे कन्या न बनाओ यजुर्वेद के व्याख्यान शतपथ भ्रामण (5/3/2/2) में पुरातन स्त्री को अन्याय बुरा-बुरा कहते है उसे अभावित कहा गया है। पुत्र ही पति हो ऐसी अनुपात उद्गव्येद में भी देखी जा सकती है, जहाँ नवप्रियाता वधू को दस पुत्रों की माँ होने का आशीर्वाद दिया गया है (उद्गव्येद 10/84/85)। वैदिक काल की यह राजस्व परम्परा आज भी अविचल प्रचलित है। पुनर्जागरण आध्यात्मिक अथवा पुरुषतल भव ही शुभाशिष्य हैं, इसके विपरित बोलना आफत मोल लेना है।

उद्गव्येद के प्रथम मंडल, सूक्त 125 में आता है राजा स्वयं ने इसारी पुत्री के विवाह के अवसर पर अपने जमाता को आह्वान किया कदनार, दस रथ, चार-चार के दल में चलने वाले सुहू देह वाले घोड़े, धन, धातु के बर्तन, वरिष्ठ, भेड़, सी काण्ठाभूषण, एक हजार सात गींगों और सों बैल दिया।

संदर्शनों से ऐसे कुसंस्करण को सहजें तथाकथित आधुनिक भारतीय समाज यदि विज्ञान की प्रयोगशालाओं में गर्भात्मक-शिशु का लिंग परिक्षण कराकर अर्थात कन्या भूराध्यात्म की पहचान कराकर उसे वही तन्त्र-तिर्यस्कर की सनातन शक्ति बना है। पुरात्मक ही उसकी जीवनोत्साहित्य की एकमात्र कस्टोटी है। गुण-पूर्ब संस्कार स्थितिक वैज्ञानिक तथ्य को दर्शित करने हुए वे कन्या को जन्माने का लाख्य अपने माये पर ले लेती हैं और प्राय: भूराध्यात्म के कृष्णत्व में भी पुरुष की अर्पणिगीता व संगीना बनती है।
इक्कीसवीं सदी का पहला दशक

इक्कीसवीं सदी के पहले दशक तक देश की स्थियाओं के लेकर उत्थान की बहुत सी उम्मीदें जगा ली गई है और इस कारण देश तलकी के रास्ते चल पड़ा है। मानव की सरक्षण संस्था का नाम है परिवार। परिवार से ही सभ्य जीवन की शुरुआत होती हुई। परिवार उज़ान कि सम्पत्ति के उज़ान देश नहीं लगता। पश्चिमी अर्थात युरोप-अमेरिक में परिवार नष्ट हो गया है तो समझदार लोग कह रहे हैं कि आज की सम्पत्ति, जो अधिकांशतः पश्चिम की देश हैं, मरणानन्त भारत में एक दूसरी परिवार का अर्थ होता है दूसरी राष्ट्र। हमारे परिवार की वर्तमान एक स्तर है, जिसे हम मानक रूप में स्वीकार करते हैं। सबसे बड़ी देवता है माता, जो एक स्तर है।

महिलाओं ने कामयाबी की नई इकारत लिखी है लेकिन सफर अभी जारी है। इन्हें अपनी कमियाँ पहचानकर उन्हें दूर करना है और अपनी कल्पना को नए आयाम देना है। एक तरफ है महिला राष्ट्रवति और दूसरी तरफ मार दी जाने वाली बेटियाँ, गर्भ और गलाने के दो धुरों के बीच में बड़े महिलाओं के सफर के स्तर बहुत है फिर भी अगर परिवार के अन्य सदस्य जिम्मेदारियों बांट ले उनको प्रतिष्ठान दे तो कोई रक्षा उनको आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती।

दिल्ली ही नहीं दूसरे राज्यों में भी बेटियों के आगे बढ़ने के लिए योजनाएं लागू की गई है। भूण्डलखा को रोकने के उद्देश्य से सभी राज्यों के स्वास्थ्य विभाग ने शहर में अधिग्रहण के संचालित अन्तर्द्वंद्व सेंटरों के विक्रमः अधिग्रहण चलना का निर्णय लिया है। हर वर्ष महिलाओं का जन्म दर घटने से बढ़ी चित्र के बाद 1994 में प्रसव पूर्व निदान तकनीकी अधिनियम (विनियमन तथा दुर्योग नियामक), देश के माध्यम से लिंग परिवर्तन पर रोक लगा दिया गया है। ताकि भूण्डलखा जैसी वादाते रुक सके।

एक समय अंग्रेज़ी का यह जुलाई बहुत मशहूर हुआ था “Law will take its own course” अर्थात कमून अपना काम करेगा। भूण्ड के लिए परिवर्तन पर रोक, दूरें निवारण जैसे दुनियारी कानून, अपनी जगह दुनिया हो सकते हैं और इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि वे एक हद तक ही सही अपना काम कर भी रहें हैं। किंतु इस दुनिया से सवारी में मुक्ति तभी मिल सकेगी, जब हमारी सोच में कान्तररीति आए। अपना मूल्य खूब सूचियाँ को तिलाँगति देनी होगी, शासकीय योजनाएं एवं प्रतिष्ठान तब तक असफल साबित होते रहेंगे, जबतक समाज आमूल यून विपर्वतन के लिए तत्पर नहीं होगा। बेहद युवा की बात है कि इस देश में यदयपि हासिल पर खड़ी ऐसी भी सामाजिक व्यवस्थाएँ हैं, जो मान्यता से संचालित एवं संवद्धित होती है। जनगणना 2011 के आंकड़े इस बात के ज्ञातव्य प्रमाण हैं कि यहाँ लिंगानुपात स्थियों के पक्ष में है। क्या तथाकथित आधुनिक भारतीय समाज इनसे नसीहत लेगा?
कन्या भूषणहत्या के विरोध में लिखी कविता

ना मुझे याज रखना ना मेरा नाम रखना
बस मेरा पैगाम याद रखना, कन्या भूषण हत्या तुम कभी न करना
भावीजनवी, बहन ओर बहु बेटियों की जन्म से पहले हत्या न करना
नहीं तो यह संसार विकृत हो जाएगा, तो फिर वारिस कहाँ पाएगा।
एक दिन फिर ऐसा आएगा दुनिया में न नर मिलेंगे और न मारी मिल पाएगी
मानव का सिर्फ नाम रह जाएगा तो फिर मानक का भविष्य कौन बढ़ाएगा
क्या इतिहास पुनः दुरारात होगा,
आदम और स्वतंत्रता को फिर से धरती पर आना होगा।
पूँछ वाले मानव फिर आएगा, वृक्षों के पते ओर जानवर की खाल पुनः पहनना होगा।
क्या पत्थर के हथियार फिर से बनाना होगा?
कच्चे मांस चबाना होगा,
या मांस आग में भूषकर खाना होगा,
क्या पुनः असम्य कहना होगा,
क्या एक बाद आदमी को फिर पाषाण युग में जाना होगा?
इसलिए में कहता हूँ कि कन्या भूषण हत्या ना करना, नहीं तो फिर पछताना
यदि नारी नहीं होगी। तो नर कहाँ से आएगा, क्या तू अपनी जनवी का नामों निशान मिटाएगा।

(CGENET Swara को प्रेषित श्री एसो पी जायस्वाल की एक कविता)

संदर्भ :-

The Hindu Daily, “Female Feticide on the rise in state”, Feb, 26, 2004

- India’s National online Newspaper, “Concern at Female feticide”. April 17, 2005
- Census of India, 2001
- Census of India, 2011
- ऋग्वेद - (10/84/85)
- यजुर्वेद - (5/3/2/2)
- अथर्व वेद - (6/11/3)
- महाभारत का आदिपर्व 3.220